पढ़नाः कुछ सैद्धांतिक और व्यवहारिक पहलू

बीरेन्द्र सिंह एवं रजनी

हमारी शिक्षण प्रणाली में भाषा शिक्षण के परंपरागत तौर-तरीके अपनी जड़ें गहरी जमाए हुए हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 ने इनमें बदलाव की पेशकश की है लेकिन अभी भी स्कूलों में प्रधानता परंपरागत तरीकों की बनी हुई है। भाषा शिक्षण के नए तौर-तरीकों पर समुचित साहित्य भी उपलब्ध नहीं है। यह लेख भाषा शिक्षण को समग्रता में देखने और उसके अनुरूप शिक्षण की पैरवी करता है।

आमतौर पर पढ़ना सीखने और सिखाने को टुकड़ों में बांटकर देखा जाता है। कक्षाओं में शिक्षकों और शिक्षिकाओं का पूरा जोर बच्चों को वर्णमाला, मात्राएं, बारहखड़ी रटाने-दोहराने व सुलेख-इमला लिखवाने के अभ्यासों पर ही केन्द्रित रहता है। पढ़ने की प्रक्रिया को लेकर पिछले दशकों में बहुत से शोधार्थियों ने काम किया है और इस बात पर सहमति जताई है कि पढ़ना लिखी हुई सामग्री से अर्थ निर्माण की प्रक्रिया है। एक ऐसी प्रकिया है जिसमें कई तरह की परस्पर संबंधित जानकारियों की आवश्यकता होती है। पढ़ना केवल लिखित शब्दों व चिह्नों को डिकोड करना नहीं है, बल्कि उससे कहीं ज्यादा व्यापक है। प्रस्तुत आलेख में पढ़ने की प्रक्रिया से संबंधित इस परिप्रेक्ष्य को समझने का प्रयास किया गया है और इसके लिए फ्रैंक स्मिथ द्वारा 1971 में लिखी पुस्तक ''अंडरस्टेंडिग रीडिंग'' को आधार बनाया गया है।

इंग्लैण्ड में जन्मे फ्रैंक स्मिथ एक मनो-भाषावैज्ञानिक हैं। भाषाविज्ञान तथा संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के बीच रिश्ते की स्थापना के लिए उनके योगदान को पिछले 35 सालों में एक पहचान मिली है। पढ़ने की प्रक्रिया की प्रकृति को समझने में उनका विशेष रूप से योगदान है। स्मिथ ने पढ़ने की प्रक्रिया को मनोवैज्ञानिक उपागम से समझने की शुरुआत की। इस उपागम की नजर से समझने पर पढ़ना केवल बाहर दिखाई देने वाली प्रक्रिया नहीं रह जाती। मस्तिष्क तथा भावों के उसके साथ संबंध महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। उनके द्वारा लिखी गई कुछ और पुस्तकें हैंः साइकोलिंग्विस्टक्स एंड रीडिंग (1985), हूज लेंग्वैज? व्हाट पॉवर? (1993), रीडिंग विदाउट नॉनसेंस (2005), रीडिंगः एफ ए क्यू ((2007) आदि।

पढ़ना क्या है

पढ़ने को लेकर फ्रैंक स्मिथ का विचार हैः

> *''पढ़ना दुनिया में सबसे स्वभाविक प्रक्रिया है। बच्चे की दुनिया में कुछ भी अस्वाभाविक नहीं होता। दुनिया की प्रत्येक वस्तु प्राकृतिक है। छपी हुई सामग्री दुनिया का ही एक अन्य पहलू है। बच्चे जिस वस्तु के संपर्क में आते हैं उससे दुनिया की समझ बनाते हैं। समझने की यह*

प्रक्रिया बहुत स्वभाविक है। इसी प्रकार पढ़ना भी एक प्रकार की स्वभाविक गतिविधि है। पढ़ना उतना ही स्वभाविक है जैसे कि किसी व्यक्ति के चेहरे के भावों को समझना। इस प्रकार पढ़ना सीखना किसी तरह का रॉकेट साइंस नहीं है। एक बच्चा जिस तरह अपने आसपास के परिवेश की समझ बनाता है, ठीक उसी प्रकार वह लिखित प्रिंट की भी समझ बनाता है। यह उतना ही स्वभाविक है जितना कि जीवन के अन्य बोधात्मक कार्य।'' (स्मिथ, 1971: 3)।

पढ़ना केवल लिखित सामग्री को डिकोड करना नहीं है, बल्कि वह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें हम लगातार अर्थ का निर्माण कर रहे होते हैं। जब हम किसी घटना या टेक्सट से अर्थ निर्माण कर रहे होते हैं, तब हम घटना की हर बारीकी पर ध्यान देने की बजाय उसकी समग्रता को पकड़ने की कोशिश करते हैं और इसी समग्रता के आधार पर उसकी व्याख्या करते हैं।

''हर प्रकार का सीखना और समझना किसी घटना को उसके संदर्भ में व्याख्यायित करना है। किसी भी लिखित सामग्री को कई तरह से पढ़ा जा सकता है और हर तरह से पढ़ना समग्रता में उसकी व्याख्या करना है। उससे अर्थ निकालना है।...जैसे किसी कार की पहचान करते हुए आप उसके टायर और हैड लाइट की चिंता नहीं करते, ठीक वैसे ही पढ़ते समय हमें विशिष्ट अक्षरों, यहां तक कि शब्दों की भी चिंता नहीं रहती।'' (वही)

सार्थक रूप से पढ़ने का अर्थ है लिखित-सामग्री को समझना (Comprehension)। इस बात को एक उदाहरण की मदद से समझते हैं। मान लीजिए, किसी अखबार में यह खबर छपती है कि ''सरकार ने शराब की कीमतें 50% कम कीं।'' इस खबर को पढ़ने और इसका वाचन करने में क्या अन्तर होगा? वाचन यानी उच्चारण, बालघात आदि की स्पष्टता और उपयुक्तता। इस खबर को पढ़ने का मतलब है, इसकी अलग-अलग छवियों को अनावृत्त करना। इस खबर में सरकार का शराब विक्रेताओं, सड़क पर चलने वालों, महिलाओं, बच्चे-बच्चियों, शराब पीने के आदी गरीब परिवारों इत्यादि के लिए क्या-क्या संदेश हैं। एक शराब पीने वाले के लिए यह एक खुशी की बात हो सकती है, क्योंकि उतने ही पैसों में अब ज्यादा शराब खरीद पाएगा। एक शराब विक्रेता के लिए इस खबर का मतलब हो सकता है, ज्यादा शराब बेचना और ज्यादा मुनाफा कमाना, महिलाओं के लिए यह खबर चिन्ता का विषय हो सकती है कि अब सड़कों और मोहल्लों में शराबियों की संख्या बढ़ जाएगी व छेड़खानी की घटना भी बढ़ जाएंगी। इस तरह के संदेशों को तलाशना और उनके बारे में अपनी राय कायम करना ही पढ़ना है। इस खबर की अलग-अलग छवियों का अनावरण तभी सम्भव है जब हमारे पास इससे संबंधित जरूरी ज्ञान का 'स्कीमा' हो।

''हमारे पास जानकारी बहुत-सी कोटियों में होती है जिसे हम एक-दूसरे से जोड़कर व्यवस्थित करते हैं। यही व्यवस्था हमारा ज्ञान बनती है। यह 'ज्ञान' अब तक के हमारे व्यक्तिगत अनुभवों के सिद्धांत पर आधारित होता है, जिसकी सहायता से हम दुनिया को समझते हैं और उसकी व्याख्या करते हैं।'' (वही:5)। व्यक्तिगत अनुभवों का यह सिद्धांत पढ़े गए पाठ की व्याख्या करने व समझने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जहां पढ़ना वाचन करने से भिन्न हो जाता है।

आइए, इस बात को समझने के लिए अन्य उदाहरण पर विचार करते हैं। मान लीजिए, आप डिस्कवरी चैनल देखती हैं। उसमें अलग-अलग दिन और अलग-अलग समय पर अलग-अलग विषयों से जुड़े कार्यक्रम दिखाए जाते हैं। कार्यक्रम में अलग-अलग लोगों की आवाजें सुनने को मिलती हैं। सवाल यह उठता है कि जिन लोगों की वे आवाजें होती हैं वे कार्यक्रम के पाठ को पढ़ रहे होते हैं या उनका वाचन कर रहे होते हैं? उनका उच्चारण बहुत स्पष्ट तथा मानक होता है। वे उपयुक्त बलाघातों का उपयोग कर बोलते हैं। उनकी आवाजों में विराम चिह्नों का उपयोग भी उपयुक्त तरीके से किया जाता है। वे आवाज में उतार-चढ़ाव लाकर सुनने वालों को आकर्षित करते हैं। तब भी यह सवाल पूछना वाजिब है कि वे कार्यक्रम के पाठ का वाचन कर रहे हैं या उसे पढ़ रहे हैं?

हम यह मान चुके हैं कि पढ़ने का मतलब है लिखे हुए का अर्थ समझना। तो क्या हम यह मान लें कि डिस्कवरी चैनल पर हमें जिनकी आवाज सुनाई देती है वे बोली जा रही बातों को समझ भी रहे हैं? इस बात को स्वीकार करने में कुछ दिक्कत है। एक व्यक्ति जो कभी खगोलशास्त्र, कैंसर विज्ञान, समुद्री विज्ञान, जादू-टोना, सापेक्षता का सिद्धांत, समाजशास्त्र, भाषा, पहनावा आदि से संबद्ध कार्यक्रमों में अपनी आवाज देता है; वह इनमें से हर विषय को समझता होगा? ऐसा होना मुश्किल है। जिन व्यक्तियों की आवाज सुनाई देती है वे उन्हें दिए गए पाठों का वाचन कर रहे होते हैं। यदि उनसे इन पाठों को समझाने या उन पर अपनी राय जाहिर करने के लिए कहा जाए तो वे कहेंगे कि यह हमारे बस का नहीं है। जबकि उनका उच्चारण उन लोगों से बेहतर हो सकता है जिन्हें उन पाठों की समझ है। इस उदाहरण से यह बात समझने में मदद मिलती है कि अच्छे वाचक अनिवार्य रूप से अच्छे पाठक नहीं होते। वाचन, पढ़ने की एक सीढ़ी है लेकिन पढ़ने की प्रक्रिया में इसका महत्त्व इतना ही है कि इसके द्वारा लिखे को डिकोड़ किया जाता है। इससे आगे की यात्रा में वाचन को पढ़ने में रूपांतरित करने के लिए अन्य अनेक पक्षों को शामिल करना होता है। जैसे- अनुभव, अनुमान, सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक अवस्थिति, विषयों से परिचय आदि। ये सभी पक्ष लिखित सामग्री को समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अब इस पर बात की जाए कि समझना क्या है? ''समझ किन्हीं कौशलों व प्रक्रियाओं की तुलना में एक अवस्था है।'' (वही: 13) जिसमें हम नए ज्ञान को पुराने ज्ञान से जोड़ते हुए उसका अर्थ निर्मित कर नए ज्ञान को ग्रहण करते हैं। किसी नए ज्ञान को अपने स्कीमा से जोड़ पाना ही अधिगम है। हम पढ़ना भी ऐसे ही सीखते हैं। यह एक स्वभाविक प्रक्रिया है।

पढ़ना एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया

बच्चे जब पढ़ने की प्रक्रिया में संलग्न होते हैं तब वे केवल शब्दों को तोड़कर नहीं पढ़ते बल्कि वे लिखित सामग्री को व्यापक संदर्भों से संबद्ध करके उससे अर्थ निर्मित कर रहे होते हैं और लिखित सामग्री की संदर्भ विशेष में व्याख्या कर रहे होते हैं। अर्थ निर्माण की इस प्रक्रिया में केवल लिखित सामग्री (text) ही शामिल नहीं होती बल्कि पाठक व लेखक के विचार भी साथ-साथ शामिल होते हैं। यानी, पाठक व उसका सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिवेश। एक पाठक जब लिखित सामग्री के संपर्क में आता है, तो वह अपने तमाम अनुभवों को एकत्रित कर उस लिखित सामग्री से अर्थ निर्मित करता है।

> *''लिखित भाषा को समझने के लिए यह जरूरी है कि हमारे पास पहले से जो ज्ञान है वह हमारी दीर्घ स्मृति का हिस्सा हो। ठीक उसी तरह जैसे किसी बोली हुई बात को समझने के लिए यह जरूरी है कि उसके बारे में हमारे पास पहले से कुछ ज्ञान होना चाहिए। पुराने अनुभवों से हम जो समझ बनाते हैं, वह भाषा और दुनिया के बारे में हमारी तमाम नई समझदारियों का आधार होती है। मनोवैज्ञानिकों द्वारा समझने की इस बुनियाद को संज्ञानात्मक ढांचे के नाम से जाना जाता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि ''संज्ञान'' का अर्थ है ''ज्ञान'' और ''ढांचे'' का अर्थ है ''संगठन''। इस प्रकार वास्तव में हमारे पास ज्ञान का संगठन होता है।'' (वही:14)*

इस बात को समझने के लिए एक उदाहरण पर विचार करते हैं। यहां कुछ नाम दिए जा रहे हैं। मोहन, गीता, जूलू, नोइक और सोयांक। इन नामों में से कौनसे ऐसे नाम हैं जिन्हें एक उत्तर भारत का विद्यार्थी सामान्यतः जल्दी पहचान लेगा? सम्भवतः मोहन और गीता को। जबकि इस बात की संभावना अधिक है कि जूलू, नोइक, सोयांक जैसे नामों को वह उतनी जल्दी से न समझ पाए। ऐसा होने का क्या कारण है? ऐसा इसलिए क्योंकि जूलू, नाइक, सोयांक जैसे नाम उसने पहले कभी सुने न हों! और किसी भी बात या विचार को समझने के लिए उसका पहले से सुना होना या उसके विषय में पहले से कुछ ज्ञान होना आवश्यक है। पहले से उपलब्ध जानकारियां, नई जानकारियों के साथ मिलकर नई जानकारियों से अर्थ निर्माण करने में मदद करती हैं और ये नई जानकारियां अब हमारी स्मृति का हिस्सा बन जाने के कारण संज्ञानात्मक ढांचे का हिस्सा बन जाती हैं। इस प्रकार उपलब्ध संज्ञानात्मक ढांचे की मदद से लिखित सामग्री को समझना और परिणामस्वरूप नए संज्ञानात्मक ढांचे का निर्माण करने का सिलसिला चलता रहता है।

''हमारे दिमाग में जो भी है, वह सब पूर्व अनुभवों की स्मृतियां हैं। उन स्मृतियों को ही हम संगठित करते हैं और पूर्व अनुभवों का यह सारांश ही संज्ञानात्मक ढांचा कहलाता है। हम जो भी देखते हैं उसकी एक-एक बारीकियों को याद नहीं रखते। हमें उन अनुभवों की मुख्य-मुख्य बातें याद रह जाती हैं जिसके आधार पर हम नई सुनी व पढ़ी हुई चीजों का अर्थ लगाते हैं। जैसे, एक व्यक्ति ने एक कुर्सी देखी और बैठने के लिए उसका इस्तेमाल किया। कुछ समय बाद जब वह कुर्सी देखता है तो वह यह नहीं सोचता कि उसने किस रंग व आकार की कुर्सी देखी थी बल्कि वह याद रखता है कि कुर्सी बैठने के लिए प्रयोग की जाती है, इसलिए उस पर बैठा जाए।'' (वही 14)

अब सवाल यह उठता है कि हम कुछ भी याद कैसे रखते हैं? इसके जवाब में फ्रैंक स्मिथ कहते हैं कि ''मुख्य रूप से सूचना प्रणाली के तीन तत्व होते हैं, 1. कोटियों के समुच्चय करना, 2. कोटि बनाने के विशेष नियम, तथा 3. कोटियों के आपसी संबंधों का जाल। कोटिकरण का अर्थ है कुछ घटनाओं या वस्तुओं को समान मानना तथा उन घटनाओं या वस्तुओं को अन्य घटनाओं या वस्तुओं से भिन्न मानना। सभी मनुष्य जन्मजात तौर पर कोटियां बनाते हैं। (वहीः पृ. 16) कोटियों के बिना अनुभवों का व्यवस्थित उपयोग कर पाना संभव नहीं है। 'फल' एक कोटि है। 'फूल' एक दूसरी कोटि है। फल और फूल की कोटि में किन वस्तुओं को रखा जाएगा, इसके कुछ नियम हैं। क्या सेब को फूल की कोटि में रखा जा सकता है? नहीं रखा जा सकता क्योंकि फूलों पर लागू होने वाले नियमों में सेब फिट नहीं बैठता। फल और फूल दो भिन्न कोटियां हैं लेकिन इन दोनों को 'वनस्पति' नाम की एक ज्यादा बड़ी कोटि में डाला जा सकता है। 'वनस्पति' नाम की कोटि 'फल' और 'फूल' की कोटियों को आपस में जोड़ती है। एक वस्तु को एक से अधिक कोटियों में रखा जा सकता है लेकिन हम एक समय में किसी वस्तु की एक ही कोटि का उपयोग करते हैं।

हम पढ़ने में इस बात के महत्त्व को एक उदाहरण के द्वारा समझने का प्रयास करते हैंः

''बड़े मजे की बात है कि हम एक ही समय में एक से अधिक कोटियों को नहीं देख सकते हैं। cat के दृश्य विन्यास में c, a, तथा t और cat शब्द को एक साथ देख पाना सम्भव नहीं है। यही वजह है कि बच्चों को पढ़ने में उस वक्त ज्यादा परेशानी का सामना करना पड़ता है जब उन्हें शब्द के अलग-अलग अक्षरों (letters) पर ध्यान केन्द्रित करना पड़े। सामान्यतः हम एक समय में एक ही कोटि को देखते हैं और अन्य सम्भावित कोटियों से बेखबर बने रहते हैं। यदि मैं आप से 410 LION STREET पता पढ़ने के लिए कहूं तो संभव है कि आप इस बात पर ध्यान ही नहीं दे कि 410 में संख्या 10 तथा LION में अक्षर (letter) आई ओ (IO) समान हैं। जब आप संख्यांक कि कोटि खोजते हैं तब आप संख्यांक देखते हैं, और जब आप अक्षरों की कोटि खोजते हैं तब आप अक्षर देखते हैं।'' (वहीः17-18)

ऊपर दिए गए उदाहरण में हमने समझा कि पहले से बनी कोटि पढ़ने की प्रक्रिया को संभव बनाती है। कोटियां संदर्भ के अनुसार एक-दूसरे से जुड़ती और अलग होती हैं। इस नेटवर्किंग को मनोवैज्ञानिक 'स्कीमा' कहते हैं। किसी भी लिखित सामग्री को बोधगम्य बनाने व पढ़ने की प्रक्रिया को अर्थपूर्ण बनाने में स्कीमा (ज्ञान का संगठन) महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जैसे, एक बच्चा जिसके पास खेत व किसानों से संबंधित 'स्कीमा' (अर्थात् खेत व किसान से संबंधित ज्ञान) नहीं है तो वह पुस्तकों में किसानों व खेती के बारे में दिए गए पाठ को नहीं पढ़ पाएगा। वह ऐसा कर पाए इसके लिए उसके स्कीमा में खेती से जुड़ी कोटियों को शामिल करने का वातावरण विकसित करना होगा।

पढ़ना एक संयोजित प्रक्रिया (composite process) है

पढ़ना एक संयोजित प्रक्रिया है जिसमें पाठ, संदर्भ, अनुभव, पाठक का परिवेश व अनुमान शामिल होते हैं। किसी भी पाठ को कुशलता से पढ़ने व समझने में ये सभी पक्ष महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस लेख में उपरोक्त विषयों पर हम चर्चा कर चुके हैं लेकिन अनुमान की चर्चा होनी बाकी है। अनुमान लगाना पढ़ने को प्रवाहमय व बोधगम्य बनाता है। पढ़ने की प्रक्रिया में अंदाजा लगाना अपने-आपमें महत्त्वपूर्ण है। अनुमान की आवश्यकता पर बात करते हुए स्मिथ

सवाल पूछते हैं कि हमें अनुमान क्यों लगाना चाहिए? क्या हम यह अपेक्षा नहीं कर सकते हैं कि दुनिया में कभी भी कुछ भी हो सकता है और इस तरह हम खुद को तमाम तरह की संभावनाओं से मुक्त कर लें। नहीं, हम ऐसा नहीं करते। क्यों? इसकी तीन मुख्य वजहें हैं। हम जिस दुनिया में रह रहे हैं वहां हमारी स्थितियां बदलती रहती हैं। जो हो रहा है उसकी बजाय हम निकट भविष्य में क्या हो सकता, उसके लिए ज्यादा चिंतित रहते हैं।

दूसरी वजह दुनिया में बहुत अस्पष्टता है और किसी भी चीज की व्याख्या के कई तरीके हो सकते हैं। अनेक में से हमें एक उचित विकल्प चुनना होता है। इसलिए हम अंदाज लगाते हैं ताकि किसी संभावित उचित विकल्प को चुना जा सके। ऐसा न करने पर हम संभावनाओं से ही घिरे रह जाएंगे। अनुमान पाठ में आने वाली अस्पष्टताओं को कम करता है और पाठक को पाठ की समझ के अनेक विकल्पों में से समय विशेष पर किसी एक विकल्प को चुनने में मदद करता है। पढ़ने के दौरान जब हम किसी टैक्स्ट को पढ़ते हैं तब पूरे वाक्यों या शब्दों को नहीं देख रहे होते बल्कि शब्द के कुछ अक्षरों के आधार पर शब्द के अनुमान लगाते हैं तथा कुछ शब्दों के आधार पर वाक्य में आने वाले अन्य शब्द या शब्दों का अनुमान लगा रहे होते हैं। इस बात को एक उदाहरण की मदद से समझते हैं।

एक बार एक जंगल में एक शेर.../एक दिन वह पेड़ के नीचे.../तभी वहां एक चूहा.../उसने शेर को तंग करने की...

जब इन वाक्यों को आपको पढ़ने के लिए दिया जाएगा तो संभव है आप पहली पंक्ति में रिक्त स्थान पर 'रहता था', दूसरी पंक्ति में रिक्त स्थान पर 'सोया हुआ', तीसरी पंक्ति में रिक्त स्थान पर 'आया' और चौथी पंक्ति में 'सोची' शब्द पढ़ें। इस टैक्स्ट में आप संदर्भ के आधार पर लिंग, काल, घटना व स्थिति के अनुसार अनुमान लगा पाएंगे और वाक्य को पूरा कर समझ पाएंगे। इस तरह अनुमान लगाना एक ऐसी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसकी मदद से पाठ को अधिक प्रवीणता के साथ पढ़ा जा सकता है।

अनुमान लगाना पढ़ने का केंद्र है। हमारे द्वारा देखी गई जगहें, नाटक, वस्तुएं, सुनी गई कहानियां और बातें, पढ़ी गई किताबें और विमर्श किसी भी लिखित सामग्री को समझने में व पढ़ने का आनंद लेने में हमारी मदद करते हैं। (वही: 24-25)। हमने पढ़ने के बारे में फ्रैंक स्मिथ के विचार को समझा। पढ़ने के बारे में अपनी समझ में कुछ और जोड़ने के लिए आइए कुछ मदद एंडरसन के दृष्टिकोण से भी लेते हैं।

पढ़ने की प्रक्रिया को एंडर्सन (पृ. 118-125) ने पांच सामान्य सिद्धांतों के रूप में प्रस्तुत किया है:

1. पढ़ना एक निर्माणात्मक प्रक्रिया है।
2. पढ़ना प्रवाहपूर्ण होना चाहिए।
3. पढ़ने की रणनीतियां होनी चाहिएं।
4. पढ़ने के लिए प्रेरणा की जरूरत होती है।
5. पढ़ने की कुशलता का विकास निरंतर होता रहता है।

1. पढ़ना एक निर्माणात्मक प्रक्रिया है

प्रायः पढ़ने को लिखित शब्दों के ठीक-ठीक उच्चारण करने से जोड़कर देखा जाता है जबकि पढ़ना केवल डिकोडिंग नहीं है। वह एक संयोजित प्रक्रिया (composite process) है। कोई भी पाठ (text) अपने-आपमें पूर्ण नहीं होता और न ही वह स्व-व्याख्यायित होता है। जब पाठक किसी पाठ को पढ़ता है तो वह अपने पास एकत्रित ज्ञान से उस पाठ की व्याख्या करता है। पाठक अपने पूर्वज्ञान से टुकडों में दी गई जानकारी को जोड़कर उसकी व्याख्या है और 'अर्थ का निर्माण' करता है। इसलिए कई बार एक 'पाठ' की अलग-अलग पाठकों द्वारा कई व्याख्याएं हो सकती हैं। क्योंकि प्रत्येक के पास पहले से जो ज्ञान है वह अलग-अलग होता है। जैसे, एक शोध में बच्चे-बच्चियों को मकड़ी से संबंधित पाठ पढ़ने के लिए दिया गया और बाद में से उस पाठ से संबंधित प्रश्न पूछे गए। वे बच्चे-बच्चियां जिनके पास 'मकड़ी' से संबंधित जानकारी पहले से थी, वे उस पाठ को बेहतर समझ पाए और प्रश्नों के उचित उत्तर दे पाए। (वही: 119)

कई बार बच्चों के पास किसी पाठ से संबंधित पर्याप्त जानकारी नहीं होती तो कई बार वे ज्ञात जानकारी का उचित प्रयोग नहीं कर पाते। शोध यह बताते हैं कि प्रायः स्कूलों में बच्चे-बच्चियां पढ़ने में असफल इसलिए होते हैं, क्योंकि वे यह नहीं जान पाते कि उनके पास जो ज्ञान है, उसका प्रयोग पढ़ने के दौरान किस प्रकार किया जाए।

2. पढ़ना प्रवाह पूर्ण होना चाहिए

पढ़ने में प्रवाहमयता का पता चलता है यदि पाठक एक-एक शब्द को सही पहचान कर पढ़े। प्रायः ऐसा माना है कि पढ़ने के दौरान किसी भी शब्द की पहचान अक्षरशः होती है और पढ़ने की तीव्रता से ही कुशलता का पता चलता है। अक्सर एक 'अच्छे' व 'बुरे' पाठक का निर्धारण उसकी पढ़ने की 'गति' व 'शुद्ध उच्चारण' के आधार पर की जाती है। यह देखा जाता है कि पाठक किस प्रकार नए शब्द में प्रयुक्त अक्षर व ध्वनि के संबंध को समझ पा रहा है जबकि शोध यह दर्शाते हैं कि एक कुशल पाठक अक्षर और ध्वनि के संबंध को पहचानने की बजाय किसी नए शब्द की पहचान पहले से ज्ञात शब्द के विश्लेषण से करता है।

3. पढ़ने की रणनीतियां होनी चाहिएं

एक कुशल पाठक वही है जो पढ़ने के दौरान अलग-अलग विकल्पों का चयन कर पाए। एक पाठक की कुशलता पढ़ने के दौरान लगाई जाने वाली रणनीतियों, पाठ की जटिलता, विषय से परिचय व पढ़ने के उद्देश्य पर निर्भर करती है। अध्ययन बताते हैं कि किसी कुशल पाठक की तुलना में अकुशल पाठक में दो रणनीतियों का अभाव होता है। एक, वह पाठ के संदर्भ में अपने ज्ञान का आकलन नहीं कर पाता और दूसरा, वह अपनी समझ को मॉनिटर नहीं कर पाता। (वही: 121)

एक कुशल पाठक पढ़ते समय पढ़ने के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर अपनी रणरनीतियां तय करता है। उदाहरण के लिए, यदि उसे कोई कहानी मजे के लिए पढ़नी है तो वह उसके विस्तार पर कम ध्यान देगा लेकिन यदि उसे वही कहानी परीक्षा देने के लिए या उस कहानी को किसी और को समझाने के लिए पढ़नी है तो वह उसके विस्तार पर भी ध्यान देगा। एक कुशल पाठक को पता होता है कि उसे कठिनाई आने पर क्या करना है। पढ़ने के दौरान आने वाली कठिनाइयों को कम करने के कई तरीके होते हैं। जैसे, समस्या को ''थोड़ी देर के लिए स्थगित कर देना'' (ऑन होल्ड) पर रख देना और आगे वाले पैराग्राफ (गद्यांश) से उसे स्पष्ट कर लेना, पाठ को बार-बार पढ़ना तथा शब्दकोश का प्रयोग करना आदि।

4. पढ़ने के लिए प्रेरणा की जरूरत होती है

सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरण महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पढ़ना अपने-आपमें एक विकासात्मक प्रक्रिया है जो अनुभव व उपलब्धता के साथ विकसित होती है। पढ़ने की प्रक्रिया में आनन्द होना चाहिए और यह उम्मीद कि नन्हे पाठक एक दिन सफल पाठक बन जाएंगे। पढ़ने की प्रक्रिया को रोचक बनाने में एक शिक्षक/शिक्षिका की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शोध यह दर्शाते हैं कि ऐसी कक्षाएं जहां शिक्षक/शिक्षिका पाठ पढ़ने से पहले पढ़ने के लिए बच्चों को अभिप्रेरित किया जाता है, पढ़ने से संबंधित दिए जाने वाले काम का परिचय उत्साह के साथ दिया जाए, इस पाठ का आधार और उसके उद्देश्य बताकर बच्चों में जिज्ञासा उत्पन्न की जाए है, उन कक्षाओं में बच्चे पढ़ने को लेकर उत्सुक होते हैं और पढ़ने का आनन्द ले रहे होते हैं।

5. पढ़ने की कुशलता का विकास निरंतर होता रहता है

पढ़ने की प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि पढ़ने का कौशल निरन्तर विकसित होता रहता है। पढ़ना किसी वाद्ययंत्र को बजाना सीखने जैसा है, जिसमें तुरत माहरत हासिल नहीं की जा सकती बल्कि एक निश्चित समय तक लगातार अभ्यास करने के बाद ही कुशलता आती है। यह एक ऐसा कौशल है जो लगातार अभ्यास से सुधरता रहता

है। यह प्रक्रिया व्यक्ति के पाठ व साहित्य व संस्कृति के संपर्क में आने से समृद्ध होती है और जीवन भर चलती रहती है। इसलिए आवश्यक है कि शुरुआती पाठकों के लिए एक ऐसा माहौल तैयार किया जाए जिसमें पढ़ने के लिए बहुत-सी किताबें और अन्य पठन-सामग्री प्रचुर मात्रा में हो।

सार

पढ़ना कोई यांत्रिक प्रक्रिया न होकर एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में पाठक के भीतरी और बाहरी कारक सक्रिय रहते हैं। भीतरी कारकों में उसका अनुभव, पढ़ने के कारण, उसकी रुचि आदि शामिल होते हैं जबकि बाहरी कारकों में पाठ, थकान, पढ़ने की जगह आदि शामिल होते हैं। इन भीतरी और बाहरी कारकों में परस्पर अंतःक्रिया को बाधित करने या नकारने से पढ़ना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन हो जाता है। किसी भी पाठ को पढ़ते समय यदि पाठक पर यह पाबंदी लगा दी जाए कि वह अपने पूर्वज्ञान का उपयोग नहीं कर सकता तो क्या उसके लिए पढ़ना संभव हो पाएगा? पढ़ना तभी संभव होगा जब पाठ और पाठक के भीतरी कारक एक साथ सक्रिय हों। ''पढ़ना केवल दृश्य गतिविधि नहीं है। पढ़ने के लिए दृश्य तथा अदृश्य दोनों तरह की सूचनाएं अनिवार्य हैं...। पढ़ना आकस्मिक नहीं होता। मस्तिष्क दिए गए मुद्रित पृष्ठ से अर्थ की समझ तुरंत नहीं बना लेता। ...पढ़ने की गति को तभी तेज किया जा सकता है जब दृश्य सूचनाओं पर इसकी निर्भरता को कम किया जाए और यह मुख्यतः अर्थ निकालने को तरजीह देकर किया जा सकता है।'' (स्मिथः 94)

पढ़ना वैसे ही है जैसे दुनिया की किसी भी वस्तु को देखना। जिस तरह वस्तुओं को खंडित कर उनकी पहचान करवाने से वस्तुओं को पहचानने की प्रक्रिया पर बुरा असर पड़ता है, उसी प्रकार किसी शब्द को अक्षरों और ध्वनियों में खंडित करने से पढ़ने की कुशलता पर बुरा असर पड़ता है। पढ़ना उतना ही स्वभाविक है जितना वस्तुओं और घटनाओं को देखना। पढ़ने की प्रक्रिया में समग्रता और स्वभाविकता को ध्यान में रखना अनिवार्य है।

पढ़ने के संदर्भ में समग्रता का एक अर्थ यह भी है कि भाषा की विभिन्न कुशलताओं का प्रशिक्षण समन्वित रूप से किया जाए। इनका विकास अलग-अलग करने से पढ़ना सीखने के स्वभाविक तरीकों को नुकसान पहुंचता है। पढ़ना विस्तृत ज्ञान पर निर्भर करता है। बच्चे घर में जितना ज्ञान अर्जित करने में सक्षम होते हैं, उनकी पढ़ने में सफल होने की संभावना और बढ़ जाती है। (एंडरसन, 1985; 32) स्मिथ के सिद्धांत के अनुसार हर बच्चा दुनिया के अनुभवों को समग्रता में सर्जित करता है। पढ़ना सीखना भी उन्हीं अनुभवों में एक और कड़ी है। पढ़ने के लिए मस्तिष्क को इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि बच्चा पूर्वज्ञान का, लिखित सामग्री से अर्थ निकालने में सचेत और अधिकतम उपयोग कर सके (स्मिथ; 87)। ◆

संदर्भ

स्मिथ, फ्रैंक (2004), अंडरस्टैंडिंग रीडिंग; अ साइकोलिंगविस्टिक एनालिसिस ऑफ रीडिंग एंड लर्निंग टू रीड, साठवां संस्करण, लॉरेंस अर्लबेम एसोसिएट्स, न्यू जर्सी, लंदन।

एंडरसन, रिचर्ड सी. और अन्य (2008)। व्हाट इज रीडिंग? रीडिंग फॉर मीनिंग; अ कलेक्शन ऑफ राइटिंगस ऑन दि प्रोसेस ऑफ रीडिंग में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

एंडरसन, रिचर्ड सी. और अन्य (1985)। एमर्जिंग लिट्रेसी, बिकमिंग अ नेशन ऑफ रीडर्स; दि रिपोर्ट ऑफ दि कमीशन ऑन रीडिंग में, नेशनल अकैडमी ऑफ एडुकेशन एवं अन्य, अमेरिका।

बीरेन्द्र सिंहः दिल्ली विश्वविद्यालय के केन्द्रीय शिक्षण संस्थान के शिक्षा शास्त्र विभाग में फील्ड-वर्कर हैं।

रजनीः राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के शिक्षा निदेशालय में शिक्षिका के तौर पर कार्यरत हैं।